02 दिसम्बर 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

न जहाँ सरकार का प्रवेश है और न जहाँ समाज की चलती है, धर्म का काम वहाँ से प्रारंभ होता है।

ह्न गागर में सागर, पृष्ठ-78

वर्ष : 32, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (प्रथम), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

गजपंथ-नासिक (महा.) : यहाँ सात बलभद्र एवं आठ करोड़ मुनिराजों की निर्वाण भूमि सिद्धक्षेत्र गजपंथ में जिर्णोद्धारित भव्य त्रिकाल चौबीसी मंदिर में विराजमान होनेवाली जिनप्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा हेतु श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन गुरुवार, दिनांक 12 नवम्बर से बुधवार 18 नवम्बर, 2009 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर त्रिशिखर युक्त भव्य जिनालय में मूलनायक चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीरस्वामी की 51 इंची श्वेत पद्मासन मनोज्ञ प्रतिमा के साथ-साथ त्रिकाल चौबीसी एवं विदेह क्षेत्रस्थ 20 तीर्थंकरों की पद्मासन प्रतिमायें एवं यहाँ से मुक्ति प्राप्त सात बलभद्रों की वीतराग भाववाही मनोज्ञ खड़गासन प्रतिमायें विराजमान की गईं।

महोत्सव में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन ग्रंथाधिराज समयसार की ७३-७४वीं गाथा पर हुये मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिर, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी भिण्ड इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा ने सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित मधुकरजी जलगाँव, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, ब्र. रवीन्द्रकुमाजी ललितपुर, ब्र. नन्हेलालजी सागर, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, ब्र.मनोजजी जबलपुर, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित बाबूलालजी बांझल गुना आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

महोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

बालक नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती इन्द्राबेन शाह-श्री पूनमचंद नाथालाल शाह, मुम्बई को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री राजेन्द्रभाई वाडीलाल गांधी-श्रीमती नयनाबेन गांधी मुम्बई थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री सचिनभाई शशीकांतभाई शाह-श्रीमती तोरलबेन शाह मुम्बई थे। महोत्सव की संपूर्ण विधि के यज्ञनायक श्री विजयभाई सुमतिचंद जैन-श्रीमती भारतीबेन जैन हाथरसवाले मुम्बई थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ श्री डाह्यालाल पूंजीराम शाह (मुनईवाला परिवार) मुम्बई के करकमलों से ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। सिंहद्वार का उद्घाटन श्री उमाकांतजी अर्पल औरंगाबाद, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्रीमती जयश्रीबेन जयप्रकाशजी शहा घाटकोपर ने किया।

रात्रि में इन्द्रसभा/राजसभा के अतिरिक्त आत्मार्थी कन्या विद्यानिकेतन दिल्ली की बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।

आयोजन में लगभग 72 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 39 हजार 532 घंटों का प्रवचन घर-घर पहुँचा। **ह्न अमरचन्द बेलोकर**

बीना में डॉ. भारिल्ल का अभिनंदन

बीना (म.प्र.) : डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल हीरक जयन्ती वर्ष के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक 19 नवम्बर को मुमुक्षु मण्डल बीना द्वारा तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह आयोजित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्रीमंत सेठ धर्मेन्द्रजी जैन खुरई ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कृष्णचंदजी सागर मंचासीन थे। प्रमुख वक्ताओं में पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित सुदर्शनजी बीना, श्री विकासजी शास्त्री बानपुर, श्री पंकजजी शास्त्री खड़ैरी, श्री अनिलजी धवल भोपाल, श्रीमती ऊषाजी ललितपुर ने अपने विचार व्यक्त किये तथा श्री नीरज जैन व कुमारी सोनल जैन ने काव्य पाठ के माध्यम से डॉ. भारिल्ल के योगदान का उल्लेख किया।

इस अवसर पर श्री शीलचन्दजी सर्राफ बीना ने डॉ. भारिल्ल को टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा होनेवाले ज्ञानप्रचार हेतु 75 हजार रुपयों की थैली समर्पित की।

ज्ञातव्य है कि यहाँ दिनांक 17 से 19 नवम्बर तक पंचमेरु-नंदीश्वर विधान का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. भारिल्ल के तीन प्रवचनों के अतिरिक्त अन्य विद्वानों के भी प्रवचन/कक्षाओं का लाभ मिला। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अनिल धवल भोपाल ने संपन्न कराये।

सम्पादकीय – 41

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

निश्चय–व्यवहार चर्या का समन्वय ह्न जो मुनिराज सदा तत्त्वविचार में लीन रहते हैं, मोक्षमार्ग (रत्नत्रय) की आराधना करना जिनका स्वभाव है और जो निरन्तर धर्मकथा में लीन रहते हैं अर्थात् यथा अवकाश रत्नत्रय की आराधना व धर्मोपदेशादि रूप दोनों प्रकार की क्रियाएँ करते हैं; उन्हें निश्चय मुनि कहते हैं।

जो श्रमण अन्तरंग में तो सदा ज्ञान–दर्शन आदि में प्रतिबद्ध रहते हैं और बाह्य में मूलगुणों में प्रयत्नशील होकर विचरण करते हैं, वे परिपूर्ण श्रामण्यवान् हैं।

निश्चय व्यवहार के समन्वय रूप से मुनिराज की भूमिका में विद्यमान आन्तरिक वीतराग परिणति की अपेक्षा से उन्हें वीतरागी एवं प्रशस्तराग की अपेक्षा से उन्हें ही सराग संयमी मुनि कहा जाता है। ध्यान रहे, ये सराग–वीतराग परिणाम मिश्रभावरूप हैं और वीतरागता की परिपूर्णता तक पाये जाते हैं; वीतरागी और सरागी मुनि दो अलग–अलग व्यक्ति नहीं हैं।

मुनिराज वीतरागी तो होते हैं; परन्तु पूर्ण सराग अवस्था को मुनि संज्ञा प्राप्त नहीं है।

यहाँ यह भी ध्यान रखने योग्य है कि आत्मा का जितना अंश वीतराग है, उससे संवर–निर्जरा और जितना अंश सराग है, उससे आस्रव–बन्ध है। इस सन्दर्भ में पुरुषार्थसिद्ध्युपाय का निम्न उल्लेख विचारणीय है ह्न

येनांशेन चरित्रं तेनांशेनास्य बन्धनं नास्ति।
येनांशेन तु रागस्तेनांशेनास्य बन्धनं भवति।।४८।।

आत्मा में जितने अंशों में वीतराग चारित्र है, उतने अंशों में बन्ध नहीं है तथा जितने अंशों में राग है, उतने अंशों में बन्ध होता है।

सराग–वीतराग चारित्र का फल दर्शानेवाले ये आगम उल्लेख भी दृष्टव्य है ह्न जो दर्शनशुद्धि से विशुद्ध हैं, मूलगुणों आदि से संयुक्त हैं, अशुभराग से रहित हैं तथा व्रत आदि से संयुक्त हैं; वे सराग श्रमण हैं।

जब यह आत्मा, धर्मपरिणत स्वभाववाला होता हुआ शुद्धोपयोग परिणति को धारण करता है, तब विरोधी शक्ति से रहित होने के कारण अपना कार्य करने के लिए समर्थ है; ऐसा चारित्रवान होने से साक्षात् मोक्ष को प्राप्त करता है और जब वह धर्मपरिणत स्वभाववाला होने पर भी शुभोपयोग परिणति के साथ युक्त होता है; तब विरोधी शक्तिसहित होने से स्वकार्य करने में असमर्थ है और कथंचित् विरुद्ध कार्य करनेवाला है; ऐसे चारित्र से युक्त होने से, जैसे अग्नि से गर्म किया हुआ घी किसी मनुष्य पर डाल देने पर उसकी जलन से वह दुःखी होता है, उसी प्रकार यह स्वर्ग–सुख से बन्ध को प्राप्त होता है; अतः शुद्धोपयोग उपादेय है और शुभोपयोग हेय है।

तात्पर्य यह है कि मुनिराज की भूमिका में सराग चारित्ररूप कमजोरी तो हो सकती है; परन्तु उसे उपादेय माननेरूप मिथ्याभ्रान्ति नहीं हो सकती। कमजोरी की स्थिति में वे सराग संयमी कहे जाएँगे; परन्तु उसे उपादेय मानने की स्थिति में मिथ्याभ्रान्ति के कारण उन्हें भावों में मुनिपना नहीं रहेगा।

निक्षेप की अपेक्षा श्रमणों के चार भेद हैं ह्न १. नाम श्रमण, २. स्थापना श्रमण, ३. द्रव्य श्रमण और ४. भाव श्रमण।

इनमें भाव श्रमण ही श्रमण हैं; क्योंकि शेष श्रमणों को मोक्ष नहीं है। इसलिए दो प्रकार के परिग्रह को छोड़कर भाव से सुसंयत हों।

जो धर्म में निरुद्यमी है, दोषों का घर है, गुण के आचरण से रहित है; वह नग्नरूप नग्न भेषधारी **नट–श्रमण** है।

अन्तरंग में मिथ्यात्व–रागादि से जिसके परिणाम कलुषित हैं और बाह्य में नग्न दिगम्बर वेष धारण करके जो उस पद के अनुरूप आचरण नहीं करता और अपनी स्वच्छन्द वृत्तियों से जिनशासन को कलंकित करता है, वह **सदोष श्रमण** है।

श्रमण के पाँच भेद ह्न १. पार्श्वस्थ, २. कुशील, ३. संसक्त, ४. अवसन्न और ५. मृगचरित्र/स्वच्छन्द। ये पाँचों प्रकार के सदोष मुनि स्वच्छन्दचारी जैनधर्म में दोष लगानेवाले होते हैं, आचार्य के उपदेश को छोड़कर एकाकी रहते हैं, धैर्य से रहित होते हैं, सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र, तप, विनय और श्रुतज्ञान से सर्वथा दूर रहते हैं। सच्चे मुनि और सज्जनों के दोष देखने में ही निपुण होते हैं, इसलिए वे अवन्दनीय हैं।

बुद्धिमान पुरुषों को किसी शास्त्र आदि के लोभ से, किसी भय से इन पार्श्वस्थ आदि मुनियों की वन्दना कभी नहीं करनी चाहिए, न विनय करनी चाहिए; जो इनकी विनय करता है, उसको कभी रत्नत्रय नहीं हो सकता।

जो जानते हुए भी लज्जा, गारव और भय से उनके पैरों पड़ते हैं, उनके बोधि अर्थात् रत्नत्रय नहीं है। कैसे हैं वे जीव? पाप की

अनुमोदना करते हैं; पापियों का सन्मानादि करने से उन्हें भी उस पाप की अनुमोदना का फल लगता है।

इनकी विशेष जानकारी के लिए मूलाचार नामक ग्रन्थ मूलतः पठनीय है।

मुनिराज के भेद-प्रभेदों से हमें उनकी अभ्यन्तर वीतराग परिणति के साथ-साथ उनकी बहिरंग परिणति की अनेक विशेषताओं का परिज्ञान होता है, जिससे हमें सच्चे मुनियों के प्रति विशेष भक्ति का भाव जागृत होता है, मुनिधर्म अंगीकार करने की प्रेरणा प्राप्त होती है। सदोष श्रमणों की स्वेच्छाचारी प्रवृत्तियों का ज्ञान हमें उनसे दूर रहने हेतु तो प्रेरित करता ही है साथ ही यह दिशा निर्देश भी करता है कि यदि गृहस्थ श्रमणधर्म अंगीकार करे तो उपर्युक्त दोषों से बचना होगा। ॐ नमः।

श्रोता ने साधु परमेष्ठी की विशेषताओं के साथ द्रव्यलिंगियों के भेद-प्रभेद, उनके गुण-दोष तो जाने ही, साथ ही भावलिंगी मुनिराजों में भी अनेक प्रकार होते हैं, यह जानकर सभी श्रोता मंत्रमुग्ध थे। उन्होंने ऐसे प्रवचन पहली बार ही सुने थे। ●

* * *

उत्तर भारत तीर्थंकरों की जन्मभूमि तो है ही, यहाँ अतिशय क्षेत्र भी सर्वाधिक हैं। अतिशय का अर्थ कोई चमत्कार-विशेष नहीं; बल्कि यहाँ अतिशयकारी ऐसे-ऐसे विशाल चित्ताकर्षक-कलापूर्ण जिनबिम्ब हैं, जिनके दर्शन कर दर्शनार्थी आश्चर्यचकित होता है। ये ही मुख्यतः यहाँ के अतिशय हैं। संभव है, स्थानीय स्तर पर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में कभी कोई घटनायें हुई हों; परन्तु आज उनका कहीं/कोई अस्तित्व नहीं है। वे केवल किंवदन्तियाँ बनकर ही रह गई हैं। अस्तुः।

यहाँ के श्रावक-श्राविकाओं में बाह्याचार भी कुछ अधिक ही है। इन कारणों से दक्षिण भारत के मुनियों का भी विहार यहाँ (उत्तर भारत) होता ही रहता है।

देवगढ़ का चातुर्मास समाप्त हुआ। मुनिसंघ वहाँ से प्रस्थान कर अतिशय क्षेत्र थूवोनजी, खन्दारगिरी ह्न चन्देरी, विशाल तीर्थक्षेत्र पपौराजी, आहारजी, सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, सिद्धक्षेत्र नैनागिरि, प्रसिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर, अपनी कलाकृति के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र खजुराहो आदि आस-पास के अतिशय क्षेत्रों एवं सिद्ध क्षेत्रों की वन्दना करता हुआ एवं तत्त्वज्ञान की वर्षा से धर्म पिपासुओं की प्यास बुझाता हुआ, कषायों की प्रज्वलित ज्वाला को शान्त करता हुआ वही मुनिसंघ सेरोनजी (शान्तिनाथ दि. जैन अतिशय क्षेत्र) पहुँचा।

क्षेत्र पर विराजित १००८ भगवान शान्तिनाथ की १८ फुट उत्तंग, अत्यन्त मनोहारी मूर्ति के दर्शन कर मुनि संघ ने परम शान्ति का अनुभव तो किया ही, साथ ही लगभग २९ भव्य प्राचीन जैन मन्दिर तथा नवनिर्मित एक मनोहारी वर्तमान चौबीसी के दर्शनों से भी उनका मन मुदित हो गया। इनके अतिरिक्त आस-पास की भूमि में खुदाई में उपलब्ध खण्डित मूर्तियों का एक पुरातत्त्वीय विशाल संग्रहालय भी दर्शनीय है।

प्रायः सभी तीर्थ क्षेत्र नगरों से न तो अतिदूर हैं और न ही अतिनिकट। इसीकारण तीर्थों का वातावरण प्रायः शान्त और एकान्त रहता है; अतः साधु-संतों को आत्म-साधना और प्रभु आराधना के अनुकूल भी रहता है। सेरोनजी भी इन्हीं सब विशेषताओं के कारण मुनिसंघ को चातुर्मास के लिए उपयुक्त लगा।

शान्ति के सिंधु, समता के पुंज, निर्वाण के वांछक, अध्यात्म एवं आनन्द की विद्या के आराधक, धर्म के भूषण मुनिराजों के दर्शन और उनका सान्निध्य पाकर कौन धर्मात्मा धन्य नहीं होगा? अपने मानव जीवन को कौन सार्थक नहीं करना चाहेगा?

देवगढ़ में चातुर्मास के समय मुनिसंघ के द्वारा प्रवाहित ज्ञानगंगा में डुबकियाँ लगाने से, तत्त्वज्ञान की वर्षा से कषायाग्नि की तपन बुझाने एवं शीतलता प्राप्त करने का आशातीत लाभ तो मिला ही साथ ही तत्त्वज्ञान की शीतल हवाओं की ठंडक तथा सदाचार के सुमनों की सुगंध भी दूर-दूर तक फैल गई? इसकारण अगला चातुर्मास कहाँ होगा ? किन्हें यह सौभाग्य प्राप्त होगा? यह जिज्ञासा जन-जन के हृदयों को आन्दोलित कर रही थी; परन्तु सेरोनजी को यह सौभाग्य सहज प्राप्त हो गया।

उपर्युक्त सभी तीर्थों के कार्यकर्त्ताओं की भावना थी कि मुनिसंघ हमारे तीर्थ पर ही अगला चातुर्मास करे; **परन्तु चाहने से क्या होता है ? होता तो वही है जो भवितव्यतानुसार पहले से ही सुनिश्चित होता है। ऐसे क्रमबद्धपर्याय एवं वस्तु स्वातंत्र्य सिद्धान्त में आस्थावान होकर भी जैन न जाने क्यों स्वयं के कर्तृत्व के भार से निर्भार नहीं हो पाते। सर्वज्ञता को स्वीकार करते हुए भी और उनके अनुसार पर्यायों की क्रमबद्धता को मानते हुए भी अपनी कर्तृत्व की भूल को स्वीकार नहीं कर पाते। अस्तुः।** **(क्रमशः)**

गुरुदेवश्री का स्मृति दिवस मनाया

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 9 नवम्बर को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का स्मृति दिवस बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन एवं श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई मंचासीन थे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल ने गुरुदेवश्री के जीवन–दर्शन संबंधी अनेक पहलुओं को छूते हुये उनके द्वारा किये गये तत्त्वप्रचार–प्रसार को लगभग एक घण्टे तक बताया। साथ ही अन्य अतिथियों ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सभा का संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने किया।

2. नागपुर (महा.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में सोमवार, दिनांक 9 नवम्बर को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का पुण्य स्मृति दिवस मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित विशिष्ट संगोष्ठी के अन्तर्गत श्री महावीर विद्यानिकेतन के छात्रों ने गुरुदेवश्री के जीवन परिचय पर प्रकाश डालते हुये कहा कि गुरुदेव की चर्या का अनुसरण करना ही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी।

पण्डित अशोकजी शास्त्री ने गुरुदेव को याद करते हुये कहा कि मरण समय परिस्थितियाँ कैसी है ?– यह महत्वपूर्ण नहीं है; अपितु उस जीव के परिणाम कैसे हैं ? अन्दर की तैयारी कैसी है ? यह महत्त्वपूर्ण है।

इस अवसर पर पण्डित विपिनजी शास्त्री ने कहा कि बाह्य आचरण को न देखकर महापुरुषों के विचारों को अपना आदर्श बनाना चाहिये; विचारधारा से जीवन में सरलता आती है। गुरुदेवश्री ने न केवल मत परिवर्तन किया; अपितु श्रद्धा और विचारों को भी दृढ बनाया और जिनवाणी का हार्द जन–जन तक पहुँचाया। जब हम आत्मचिन्तन व तत्त्वविचारपूर्वक तत्त्वनिर्णय कर आत्मानुभूति करेंगे, तभी गुरुदेवश्री के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी। **–मनीष जैन/अखिलेश जैन**

3. अलवर (राज.) : यहाँ दिनांक 9 नवम्बर को कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट एवं मुमुक्षु मण्डल फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में गुरुदेवश्री कानजी स्वामी का पुण्यतिथि समारोह संपन्न हुआ।

समारोह के अन्तर्गत सर्वप्रथम प्रात: सामूहिक पूजन रखी गई, तत्पश्चात् गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन तथा पण्डित निलयजी शास्त्री व पण्डित अरुणजी शास्त्री के प्रवचन का लाभ मिला।

इस अवसर पर आयोजित श्रद्धांजली सभा में श्री प्रेमचन्दजी, श्री अरुणजी शास्त्री एवं श्री अमितजी शास्त्री ने गुरुदेवश्री के संबंध में अपने भाव व्यक्त किये।

आवश्यकता

जयपुर से लगभग 30 कि.मी. दूर अजमेर रोड पर जिनमंदिर निर्माण से संबंधित कार्य को संभालने हेतु निर्माणकार्य करवाने में कुशल अनुभवी योग्य व्यक्ति की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें ह्न राजेश जैन–09829273655/संजीव गोधा–9829064980

धर्म प्रभावना

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री अम्बाबाडी दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 12 से 18 नवम्बर, 2009 तक समाज के विशेष आग्रह पर एक विशिष्ट शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर प्रतिदिन सायंकाल पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ द्वारा **छहढाला** पर सारगर्भित प्रवचन एवं तदुपरान्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा **तीन लोक (जैन भूगोल)** विषय पर विशेष कक्षा चलाई गई। सभी ने अभूतपूर्व लाभ लिया।

इसके पूर्व स्थानीय महिला मण्डल द्वारा जिनेन्द्र भक्ति का सुन्दर आयोजन किया गया। स्थानीय जैन समाज एवं मंदिर पदाधिकारियों ने धर्म प्रभावना के इस आयोजन की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुये इसप्रकार के लघु शिविर आगामी काल में भी लगाते रहने की घोषणा की।

2. फलटण (महा.) : यहाँ दिनांक 21 से 27 अक्टूबर तक पण्डित दिनेशभाई शहा तथा डॉ. उज्ज्वला शहा द्वारा प्रतिदिन 6 घंटे **सिद्धांत प्रवेशिका** तथा **जैनभूगोल** पर प्रवचनों का लाभ मिला। बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी ने 6 घंटे रुचिपूर्वक स्वाध्याय किया। अत्यधिक लाभ मिलने के कारण समाज ने उन्हें पुन: 25 दिसम्बर से 1 जनवरी तक आमंत्रित किया है। **– सुकुमार चकेश्वरा**

विधान एवं गोष्ठी सम्पन्न

दलपतपुर–सागर (म.प्र.) : यहाँ आदिनाथ दि.जैन मंदिर, बस स्टेण्ड में दिनांक 19 अक्टूबर को रत्नत्रय मंडल विधान का आयोजन किया गया। विधान के कार्य पण्डित विवेकजी मोदी, पण्डित निखिलेश शास्त्री, पण्डित आशुतोष मंगलायतन, पण्डित अनेकांत दिवाकर एवं पं. प्रवीणजी ने सम्पन्न कराये। रात्रि में भगवान महावीर के सिद्धांतों पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया तथा अन्त में पारितोषिक वितरण भी हुआ।

उद्घाटन समारोह सम्पन्न

शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 26 अक्टूबर को नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन परमागम मंदिर का उद्घाटन समारोह अनेक कार्यक्रमों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम जिनेन्द्र शोभायात्रा छत्री मंदिर से प्रारंभ होकर नगर परिक्रमा करके परमागम मंदिर पहुँची। वहाँ श्री वीरसेनजी सर्राफ परिवार भिण्ड द्वारा ध्वजारोहण एवं श्री प्रेमचंदजी सुमतप्रकाशजी परिवार द्वारा मंगल कलश स्थापना के पश्चात् रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिरी के मार्मिक प्रवचनों के उपरांत उद्घाटन सभा का आयोजन हुआ। सभा की अध्यक्षता डॉ. आर.के.जैन विदिशा ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा तथा अनेक विशिष्ट अतिथि मंचासीन थे।

परमागम मंदिर का उद्घाटन डॉ. बासंती बेन शाह मुम्बई के कर कमलों से हुआ। श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा सत्साहित्य विक्रय केन्द्र का उद्घाटन किया गया।

दोपहर व रात्रि में आध्यात्मिक प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुये। दिनांक 27 अक्टूबर को भी प्रात: पूजन तथा पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिरी का मार्मिक प्रवचन हुआ। **–जयकुमार जैन (अध्यक्ष)**

मोक्षमार्ग के प्रणेता

इस रास्ते में
जगह–जगह
सिग्नल हैं, स्पीड ब्रेकर हैं,
फिर भी ट्रेफिक पुलिस तैनात है,
उनकी भी सख्त जरूरत जो है।
सब लोग कहाँ पालन करते हैं
ट्रेफिक नियमों का ?
सिग्नलों को अनदेखा कर
यलो लाइन क्रॉसकर
जम्प कर देते हैं
और क्षण भर में ही
जानलेवा दुर्घटनाएँ घट जाती हैं।
इसी तरह
जिनागम में भी
नय हैं, निक्षेप हैं,
स्याद्वाद है, सप्तभङ्गी है
एकान्त से बचने के लिये
एवकार का प्रयोग है
फिर भी आचार्यों की जरूरत पड़ती है,
इसलिये देव–शास्त्र के बाद
मोक्षमार्ग के प्रणेता
गुरु को याद किया जाता है।
श्रुतदीपक लिये हुये
वे कदम–दर–कदम साथ चलते हैं
शिक्षा–दीक्षा देते हैं, आचरण कराते हैं
व्रत–समिति–गुप्तियों में दोष लग जाने पर
प्रायश्चित भी उनका फिर याद दिलाते हैं
कितना ध्यानपूर्वक संघ को,
वे मोक्षमार्ग पर ले जाते हैं,
तब कहीं जाकर
भव्य जीव संसार सागर को पार कर पाते हैं।

–बाहुबलि भोसगे

आवश्यक सूचना

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) द्वारा जनवरी 2010 में आयोजित होने वाली शीतकालीन परीक्षा के छात्र प्रवेश फार्म संबंधित सभी परीक्षा केन्द्रों को भिजवाये जा चुके हैं; अत: तत्काल भरकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय, जयपुर को भिजवा देवें। जिन केन्द्रों को डाक की गड़बड़ी से अभी तक भी प्रवेश फार्म नहीं पहुँचे हों, वे कृपया पोस्टकार्ड लिखकर मंगवा लेवें।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय द्वारा आयोजित साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनांक १५ नवम्बर को **पुराण : एक अनुशीलन** विषय पर शास्त्री वर्ग के विद्यार्थियों हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री पूनमचंदजी छाबड़ा ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में आशीष जैन शास्त्री प्रथम वर्ष रहे। गोष्ठी का संचालन कपिल जैन पिड़ावा ने किया।

दिनांक २५ नवम्बर को **छहढाला : एक लघु समयसार** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें उपाध्याय वर्ग के छात्रों ने विभिन्न बिन्दुओं के माध्यम से छहढाला का सार बताया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान विकास जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) तथा द्वितीय स्थान रजतकांत जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) ने प्राप्त किया। गोष्ठी का संचालन राहुल जैन दमोह ने किया।

– अभिषेक मड़देवरा

डॉ. भारिल्ल हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

धर्म क्षेत्र में नोबल पुरस्कार योग्य पुरुष

कोटा से श्री भानुकुमारजी जैन, डबल एम.ए.(जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन) डॉ. भारिल्ल की प्रशंसा करते हुये लिखते हैं कि प्राणीमात्र को अनन्त सुखी होने का रास्ता बताने वाले इस वर्तमान समय में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के बाद कोई पुरुष है तो वह सिर्फ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल साहब हैं।

शान्ति, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में विश्व में विशिष्ट कार्य करने वालों को नोबल पुरस्कार दिया जाता है; लेकिन धर्म के क्षेत्र में भी अगर नोबल पुरस्कार प्रदान किया जावे तो विश्व में एकमात्र व्यक्ति डॉ. भारिल्लजी हैं। उनके लिये तो यह पुरस्कार भी कोई मायने नहीं रखता।

डॉ. साहब के अलावा विश्व में कोई महापुरुष नहीं जो भव के बन्धन से छूटने का सम्यकमार्ग आगम के आधार से बता सके।

बालवर्ग हेतु वीडियो सी.डी.

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर द्वारा बालवर्ग को संस्कारित करने हेतु दो नये वीडियो तैयार किये गये हैं। पण्डित दौलतरामजी कृत **छहढाला** के वीडियो के अन्तर्गत प्रत्येक पद्य का अर्थ भी दिया गया है। इसकी परिकल्पना और संयोजन पण्डित सौरभजी शास्त्री व पण्डित गौरवजी शास्त्री इंदौर तथा निर्देशन श्री विरागजी शास्त्री देवलाली ने किया।

गाथा महापुराण की वीडियो सी.डी. के अन्तर्गत अकलंक–निकलंक, सती अनंगसरा, पण्डित टोडरमलजी की कथा के अतिरिक्त चार गीत भी दिये गये हैं। इन गीतों की रचना, निर्देशन व संकलन विरागजी शास्त्री देवलाली ने किया।

– सुनील जैन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 41

नौवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि पण्डित टोडरमलजी और आध्यात्मिक-सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी ह्न दोनों अविरत थे, सम्यग्दृष्टि थे; अविरत सम्यग्दृष्टि थे और आप स्वयं दोनों को गुरु मानते हैं, गुरुदेव कहते हैं। ह्न इसका क्या उत्तर है आपके पास ?

अरे, भाई ! बात उत्तर की नहीं है, वस्तुस्थिति यह है कि देव-शास्त्र-गुरु में जिन्हें गुरु माना गया है, जिनकी हम अरहंतदेव के समान ही प्रतिदिन पूजन करते हैं; इसप्रकार के गुरु न तो पण्डित टोडरमलजी थे और न आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी ही थे। न तो वे स्वयं को देव-शास्त्र-गुरुवाला गुरु मानते थे और न हम ही उन्हें देव-शास्त्र-गुरुवाला गुरु मानते हैं।

जिसप्रकार लोक में किसी भी विषय को पढानेवाला कोई भी अध्यापक उनसे पढनेवाले छात्रों का गुरु कहलाता है; उसीप्रकार जैनदर्शन का मर्म बतानेवाले, पढानेवाले; अध्यात्म का रहस्य समझानेवाले भी तो गुरु ही हैं। लौकिक विषय पढानेवालों से तो वे असंख्यगुणे महान हैं, उपकारी हैं; इसी अपेक्षा हम उन्हें गुरुदेव कहते हैं। उनके उपकार को स्मरण करते हैं; उनकी पूजा नहीं करते।

कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर भी तो गुरुदेव ही कहे जाते थे। महाराष्ट्र में आज भी हर अध्यापक को गुरुजी कहकर बुलाते हैं। हम जब पढते थे; तब अपने अध्यापक पण्डित नन्हेलालजी शास्त्री को गुरुजी ही कहते थे।

यहाँ जो प्रकरण चल रहा है, वह देव-शास्त्र-गुरुवाले गुरु का है। उसे इससे मिलाने की आवश्यकता नहीं है।

इसप्रकार का प्रश्न एक बार मैंने स्वयं स्वामीजी से किया था, जिसका उत्तर उन्होंने इसप्रकार दिया था ह्न

''प्रश्न ह्न आपको लोग गुरुदेव कहते हैं। क्या आप साधु हैं ? गुरु तो साधु को कहते हैं ?

उत्तर ह्न साधु तो नग्न दिगम्बर छठवें-सातवें गुणस्थान की भूमिका में झूलते भावलिंगी वीतरागी सन्त ही होते हैं। हम तो सामान्य श्रावक हैं, साधु नहीं। हम तो साधुओं के दासानुदास हैं। अहा ! वीतरागी सन्त कुन्दकुन्दाचार्य, अमृतचन्द्र आदि मुनिवरों के स्मरण मात्र से हमारा रोमांच हो जाता है।

प्रश्न ह्न तो फिर आपको लोग गुरुदेव क्यों कहते हैं ?

उत्तर ह्न भाई ! गोपालदासजी बरैया को भी तो गुरु कहते थे। देव-शास्त्र-गुरुवाले गुरु तो पंचपरमेष्ठी में आचार्य, उपाध्याय, साधु ही हैं। हमसे लोग अध्यात्म सुनते हैं, सीखते हैं, सो गुरुदेव कहते हैं।

प्रश्न ह्न तो आपको गुरुदेव विद्यागुरु के अर्थ में कहा जाता है, देव-शास्त्र-गुरु के अर्थ में नहीं ?

उत्तर ह्न हाँ, हाँ; यही बात है। भाई ! हम तो कई बार कहते हैं कि वस्त्रादि रखे और अपने को देव-शास्त्र-गुरुवाला गुरु माने, मनवावे; वह तो अज्ञानी है। इससे अधिक हम क्या कहें ?''

यह बात आज से 33 वर्ष पहले उस समय की है, जब जुलाई 1976 ई. में सोनगढ से प्रकाशित और आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों का प्रसारक आत्मधर्म (आध्यात्मिक मासिक) का संपादन मुझे सौंपा गया था; तब सबसे पहले मेरे संपादन में प्रकाशित होनेवाले पहले ही अंक में संपादकीय के रूप में, उनसे लिया गया एक साक्षात्कार (इन्टरव्यू) प्रकाशित किया था; जिसमें उनके मुख के माध्यम से उन सभी शंकाओं का समाधान प्रस्तुत किया गया था; जो उनके विरुद्ध बुद्धिपूर्वक फैलाई जा रही थीं।

उक्त अंश उसी साक्षात्कार का है। जिन्हें विशेष जिज्ञासा है, वे लोग 'चैतन्यचमत्कार' नामक पुस्तक में उसे पूरा पढ सकते हैं, वह पुस्तक हमारे यहाँ अभी भी उपलब्ध है।

प्रश्न ह्न आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी भी तो भाई-बहिनों को ब्रह्मचर्यव्रत देते थे ? जिन्हें वे ब्रह्मचर्यव्रत देते थे; क्या वे सभी सम्यग्दृष्टि-सम्यग्ज्ञानी होते थे, अणुव्रती होते थे ? यदि नहीं तो फिर.....।

उत्तर ह्न जब वे किसी को ब्रह्मचर्यव्रत देते थे तो पहले वर्षों तक तत्त्वाभ्यास कराते थे, निवृत्तिमय जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। न केवल प्रेरणा देते थे, अपितु लोग उनके सान्निध्य में रहकर वर्षों तत्त्वाभ्यास करते थे; जब वे उनके अध्ययन और आचरण से पूरी तरह संतुष्ट हो जाते थे, तब भी ब्रह्मचर्यव्रत देते समय यह साफ-साफ कहते थे कि यह ब्रह्मचर्य प्रतिमावाला ब्रह्मचर्य नहीं है। यह तो तत्त्वाभ्यास के लिए पर्याप्त समय मिल सके; इसलिए निवृत्ति का मार्ग है। यह तो मात्र शादी न करके पूरी तरह स्वाध्याय में जीवन समर्पित करके सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति के प्रयास के लिए समर्पित होने का मार्ग है; क्योंकि शादी के बाद उलझाव ही उलझाव रहते हैं। इसलिए वे कहते थे कि यह काया का ब्रह्मचर्य है, मन-वचन के पूर्ण ब्रह्मचर्य के लिए तो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और कम से कम 7वीं प्रतिमा के योग्य देशचारित्र होना आवश्यक है।

यही कारण है कि वे किसी वेश को धारण करने की बात नहीं करते थे, उनसे ब्रह्मचर्य लेनेवाले सभी वही अपनी पुरानी पोशाक धोती-कुर्ता ही पहनते थे।

प्रश्न ह्न पर वे स्वयं तो.....।

उत्तर ह्न जब उन्होंने दिगम्बर धर्म स्वीकार किया; उसके पूर्व वे स्थानकवासी श्वेताम्बर साधु थे। अत: जिस वेश में रहते थे, उसमें से स्थानकवासी श्वेताम्बर साधुत्व की निशानी मुहपट्टी तो उन्होंने छोड़ दी, शेष वैसे ही कपड़े पहनते रहे। उन्हें लगा कि अब क्या धोती-कुर्ता पहनूँ; पर वे स्पष्ट कहते रहे कि मैं कोई साधु नहीं हूँ, मेरे कोई प्रतिमा भी नहीं है। यदि वे अपने वेश को ब्रह्मचारियों का वेश मानते होते तो जिन्होंने उनसे ब्रह्मचर्य लिया था, कम से कम वे लोग तो उनके वेश में रहते।

जैनदर्शन में साधुता के तीन ही वेष (लिंग) हैं। एक नग्न दिगम्बर मुनिराज का, दूसरा उत्कृष्ट श्रावक का और तीसरा आर्यिकाओं का। इसके अतिरिक्त कोई वेश दिगम्बर जिनधर्म में मान्य नहीं है।

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का मोक्षमार्गप्रकाशक में समागत

निम्नांकित कथन दृष्टव्य है ह्न

''तथा कितने ही प्रकार का भेष धारण करने से गुरुपना मानते हैं; परन्तु भेष धारण करने से कौनसा धर्म हुआ कि जिससे उन्हें धर्मात्मा–गुरु मानें ? वहाँ कोई टोपी लगाते हैं, कोई गुदड़ी रखते हैं, कोई चोला पहिनते हैं, कोई चादर ओढते हैं, कोई लाल वस्त्र रखते हैं, कोई श्वेत वस्त्र रखते हैं, कोई भगवा रखते हैं, कोई टाट पहिनते हैं, कोई मृगछाला रखते हैं, कोई राख लगाते हैं ह्न इत्यादि अनेक स्वांग बनाते हैं।

परन्तु यदि शीत–उष्णादिक नहीं सहे जाते थे, लज्जा नहीं छूटी थी, तो पगड़ी जामा इत्यादि प्रवृत्तिरूप वस्त्रादि का त्याग किसलिए किया ? उनको छोड़कर ऐसे स्वांग बनाने में धर्म का कौनसा अंग हुआ ?

गृहस्थों को ठगने के अर्थ ऐसे भेष जानना। यदि गृहस्थ जैसा अपना स्वांग रखे तो गृहस्थ ठगे कैसे जायेंगे ? और इन्हें उनके द्वारा आजीविका व धनादिक व मानादि का प्रयोजन साधना है; इसलिए ऐसा स्वांग बनाते हैं। भोला जगत उस स्वांग को देखकर ठगाता है और धर्म हुआ मानता है; परन्तु यह भ्रम है। यही उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला में कहा है ह्न

जह कुवि वेस्सारत्तो मुसिज्जमाणो विमण्णए हरिसं।
तह मिच्छवेसमुसिया गयं पि ण मुणंति धम्मणिहिं।।

जैसे कोई वेश्यासक्त पुरुष धनादिक को ठगाते हुए भी हर्ष मानते हैं; उसीप्रकार मिथ्याभेष द्वारा ठगे हुए जीव नष्ट होते हुए धर्मनिधि को नहीं जानते हैं। इन मिथ्यावेशवाले जीवों की सुश्रुषा आदि से अपना धर्मधन नष्ट होता है, उसका विषाद नहीं है, मिथ्याबुद्धि से हर्ष करते हैं।

वहाँ कोई तो मिथ्याशास्त्रों में जो वेश निरूपित किये हैं, उनको धारण करते हैं; परन्तु उन शास्त्रों के कर्ता पापियों ने सुगम क्रिया करने से उच्चपद प्ररूपित करने में हमारी मान्यता होगी व अन्य बहुत जीव इस मार्ग में लग जायेंगे, इस अभिप्राय से मिथ्या उपदेश दिया है।

उसकी परम्परा से विचार रहित जीव इतना भी विचार नहीं करते कि सुगमक्रिया से उच्चपद होना बतलाते हैं सो यहाँ कुछ दगा है। भ्रम से उनके कहे हुए मार्ग में प्रवर्तते हैं।

तथा कोई शास्त्रों में तो कठिन मार्ग निरूपित किया है, वह तो सधेगा नहीं और अपना ऊँचा नाम धराये बिना लोग मानेंगे नहीं; इस अभिप्राय से यति, मुनि, आचार्य, उपाध्याय, साधु, भट्टारक, संन्यासी, योगी, तपस्वी, नग्न ह्न इत्यादि इच्छानुसार नाना वेश बनाते हैं तथा कितने ही अपनी इच्छानुसार ही नवीन नाम धारण करते हैं और इच्छानुसार ही वेश बनाते हैं।

इसप्रकार अनेक वेश धारण करने से गुरुपना मानते हैं; सो यह मिथ्या है।

यहाँ कोई पूछे कि वेश तो बहुत प्रकार के दिखते हैं, उनमें सच्चे–झूठे वेश की पहिचान किसप्रकार होगी ?

समाधान ह्न जिन वेशों में विषय–कषाय का किंचित् लगाव नहीं है, वे वेश सच्चे हैं। वे सच्चे वेश तीन प्रकार के हैं; अन्य सर्व वेश मिथ्या हैं।

वही षट्पाहुड़ (दर्शनपाहुड़) में कुन्दकुन्दाचार्य ने कहा है ह्न

एगं जिणस्स रूवं बिदियं उक्किट्ठसावयाणं तु।
अवरट्ठियाण तइयं चउत्थ पुण लिंगदंसणं णत्थि।।18।।

एक तो जिनस्वरूप निर्ग्रन्थ दिगम्बर मुनिलिंग, दूसरा उत्कृष्ट श्रावकों का रूप ह्न दशवीं, ग्यारहवीं प्रतिमाधारी श्रावक का लिंग, तीसरा आर्यिकाओं का रूप ह्न यह स्त्रियों का लिंग ह्न ऐसे यह तीन लिंग तो श्रद्धापूर्वक हैं तथा चौथा कोई लिंग सम्यग्दर्शनस्वरूप नहीं है।

इन तीन लिंग के अतिरिक्त अन्य लिंग को जो मानता है, वह श्रद्धानी नहीं है, मिथ्यादृष्टि है तथा इन वेशियों में कितने ही वेशी अपने वेश की प्रतीति कराने के अर्थ किंचित् धर्म के अंग को भी पालते हैं।

जिसप्रकार खोटा रुपया चलानेवाला उसमें कुछ चांदी का अंश भी रखता है; उसीप्रकार धर्म का कोई अंग दिखाकर अपना उच्चपद मानते हैं।[1]''

उक्त कथन से यह अत्यन्त स्पष्ट है कि दिगम्बर जैनधर्म के अनुसार मुनि, आर्यिका और उत्कृष्ट श्रावक ह्न इनके अतिरिक्त न कोई पद हैं और न कोई वेश। त्यागी, व्रती, ब्रह्मचारी, भट्टारक आदि कोई ऐसा पद नहीं है कि जो धर्ममान्य हो और न इनका कोई भेष ही सुनिश्चित है।

हमारे एक मित्र थे। वे अत्यन्त सात्त्विक वृत्ति के सदाचारी ब्रह्मचारी विद्वान थे। वे पहले तो धोती–कुर्ता ही पहनते थे; किन्तु बाद में उन्होंने चादर ओढ ली।

मैंने उनसे अत्यन्त नम्रता से पूछा ह्न ''क्या कुछ और व्रत ले लिये हैं?''

उन्होंने कहा ह्न ''नहीं, नहीं; ऐसी कोई बात नहीं है।''

तब मैंने कहा ह्न ''तब फिर भेष में यह परिवर्तन क्यों ? अरे, भाई ! यदि जीवन में कोई अन्तर नहीं आया तो फिर कपड़े क्यों बदले ?''

वस्तुत: बात यह है कि हमें बदलना तो स्वयं को था, स्वयं के जीवन को था, जीवनचर्या को था; किन्तु हम कपड़े बदल कर धर्मात्मा बनना चाहते हैं। बनना क्या, दिखना चाहते हैं।

गुणों को तो गुणवान ही पहिचान पाते हैं; भोली–भाली जनता तो वेश से ही प्रभावित होती है। जबतक गांधीजी शूट–बूट में रहे, तबतक जनता का दिल नहीं जीत सके; पर जब उन्होंने लगोटी लगा ली, चादर ओढ ली तो सारी दुनियाँ झुक गई।

आज भी इस दुनियाँ में तो वेश की ही पूजा होती है। यही कारण है कि लोग जनमत को प्रभावित करने के लिए वेश बदलते रहते हैं।

अन्दर के बदले बिना बाहर से वेश बदलने से धर्मात्मा तो नहीं बनते; पर ठग अवश्य बन जाते हैं।

मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि गांधीजी ने दुनियाँ को ठगने के लिए वेश बदला था; क्योंकि उन्होंने तो जो कुछ किया था, विचारपूर्वक पवित्रभाव से किया था। उनका चिन्तन यह था कि जब मैं भारत की भूखी–नंगी जनता का प्रतिनिधि हूँ, उनके कल्याण के लिए लड़ रहा हूँ तो फिर मुझे कपड़े भी उन जैसे ही पहनना चाहिए।

किन्तु दिगम्बर मुनिराज नग्न किसी दूसरों के कारण नहीं रहते; अपितु मुनिराजों की नग्नदशा उनकी वीतरागी परिणति का परिणाम है। यही कारण है कि जिसके मिथ्यात्व और तीन कषायों के अभावरूप वीतराग परिणति तो न हो और बाह्य में नग्न दिगम्बर दशा हो तो उसे द्रव्यलिंगी कहा जाता है। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ १७८

2 दिसम्बर 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

पाषाण शुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ आरती मार्बल, अजमेर रोड पर दिनांक २७ नवम्बर को श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ द्वारा मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में निर्माणाधीन महावीरस्वामी जिनमंदिर हेतु विराजमान होने वाले जिनबिम्बों के शिलाखण्ड की शास्त्रोक्त विधि से शुद्धि का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पूजन के पश्चात् गुरुदेवश्री के मांगलिक प्रवचन का लाभ मिला। आयोजित सभा का प्रारंभ कुमारी परिणति पाटील के मङ्गलाचरण से हुआ। सभा की अध्यक्षता श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। विद्वत्वर्ग में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला। श्री पवनजी जैन अलीगढ ने दिसम्बर-२०१० में होनेवाले पंचकल्याणक की रूपरेखा एवं विश्वविद्यालय में जैनतत्त्वज्ञान की गतिविधियों का विस्तृत परिचय सभा को दिया।

इसी प्रसंग पर शिल्पकारों का सम्मान करते हुये उन्हें प्रतिमा निर्माण में शुद्धता रखने हेतु आवश्यक प्रतिज्ञायें दिलाई गई। तत्पश्चात् पाषाणशुद्धि का कार्य सम्पन्न हुआ। इसके अन्तर्गत टोडरमल महिला मण्डल की सदस्याओं एवं अन्य सभी बहनों द्वारा पाषाण की शुद्धि की गई तथा उपस्थित जनसमुदाय द्वारा स्वस्तिक बनाया गया।

मंचासीन अतिथियों में श्री अजितजी बड़ौदा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री सी.एस.जैन देहरादून, प्रो.पी. के.जैन रुडकी, पं. संजीवजी गोधा एवं पं. पीयूषजी शास्त्री सम्मिलित थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ ने सम्पन्न कराये। इस अवसर पर श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर एवं आदिनाथ विद्यानिकेतन अलीगढ के छात्रों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

संपूर्ण कार्यक्रम श्री पवनजी जैन अलीगढ एवं श्री अशोकजी लुहाड़िया के निर्देशन में संपन्न हुये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 28 दिसम्बर	दक्षिण भारत	अ. भा. जैन युवा फैडरेशन यात्रा
29 व 30 दिसम्बर	बैंगलोर	प्रवचन
31 से 4 जनवरी	चैन्नई	व्याख्यानमाला
9 से 10 जनवरी	चैतन्यधाम (अहमदाबाद)	महासमिति सम्मेलन
16 से 17 जनवरी	इन्दौर	विधान
8 से 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
28 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर व हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर

शोक समाचार...

1. **बिजौलिया निवासी श्रीमती सज्जनबाई ध.प. स्व.चांदमलजी लुहाडिया** का 84 वर्ष की आयु में दि.16 नवम्बर को शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप बहुत सरल स्वभावी एवं स्वाध्यायी महिला थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक एवं मंगलायतन के निर्देशक पण्डित अशोकजी लुहाडिया की मातुश्री थीं। आपकी स्मृति में 500/-रुपये प्राप्त हुये हैं।

2. **ललितपुर निवासी श्री भागचंदजी चौधरी** का दिनांक 9 नवम्बर को 92 वर्ष की आयु में समताभावपूर्वक निधन हो गया। ये गुरुदेव के अनन्य भक्त, ललितपुर मुमुक्षु समाज के स्तम्भ एवं बहुत पुराने मुमुक्षुओं में से थे। आपकी स्मृति में 1000/- प्राप्त हुये हैं।

3. **बड़नगर-उज्जैन (म.प्र.) निवासी श्री विमलचंदजी शाह** का 72 वर्ष की आयु में दिनांक 13 नवम्बर को देहावसान हो गया। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में गहन तत्त्वाभ्यास किया था। आप प्रारंभ से ही बड़नगर में मुमुक्षु समाज से जुड़े रहे तथा बाद में कुन्दकुन्द कहान ट्रस्ट मुम्बई से भी जुड़े। आपके निधन से बड़नगर मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

अब 9000 प्रवचन मात्र 16 डी.वी.डी. में

श्री शांतिलाल रतिलाल शाह परिवार मुम्बई के सहयोग से श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई अब आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अद्यावधि उपलब्ध 9000 प्रवचन मात्र 16 डी.वी.डी. में तैयार करा रहा है। प्रत्येक डी.वी.डी. में लगभग 550 प्रवचन होंगे।

आगे चलकर ऐसी डी.वी.डी. भी तैयार की जा रही है, जिसमें एक डी.वी.डी. में 3000 प्रवचन होंगे। इस संदर्भ में विशेष जानकारी यथा समय दे दी जायेगी।

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127